31.0 प्रागैतिहासिक मानव की बौद्धिकता एवं सृजनशीलता : शिल्प कला के विशेष संदर्भ में

● **मीनू यादव,** शोध छात्रा, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ
Email- meenu500yadav@gmail.com

शोध-सार

प्रागैतिहासिक काल में मानव प्राकृतिक पर्यावरण में निवास करता था और प्रकृति से प्राप्त चीज़ों का प्रयोग अपने जीवन-यापन के लिए करता रहा होगा ।जिसके अंतर्गत प्रकृति में सुलभता से प्राप्त लकड़ी व प्रस्तर का प्रयोग (प्रारंभिक स्तर पर अपनी सुरक्षा व आखेट के रूप में) करता था। जिनमें प्रस्तर अवशेष, प्रागैतिहासिक जीवाश्म अवशेषों के साथ प्राप्त हुए है । जिनमें प्रारंभिक शिल्प कला के स्वरूप की झलक देखी जा सकती है प्रागैतिहासिक काल की तीन चरणों - पूर्वपाषाण काल , मध्यपाषाण काल और नवपाषाण काल के विभाजन में मानव द्वारा की गई प्रस्तर कारी सहायक रही। पूर्वपाषाण काल के दौरान मानव द्वारा बनाये प्रस्तर शिल्प के उपकरण जैसे - खंदक (chopper-chopping tool), हस्त कुठार (Hand Axe), विदारणी (Cleaver) , खुरचनी (Scraper), वेधक (Borer), और नोक वाले अग्रक (point) , फलक (Blades) और तक्षणी (Burins) आदि, साथ ही हड्डियों, जानवरों की सिंगों व हाथी दाँत के बने उपकरणों के माध्यम से शिल्प कला के विकास की निरंतरता को देखा जाता सकता है । मध्य पाषाण काल व नव पाषाण में भी उपर्युक्त विशेषताओं के साथ-साथ काष्ठ शिल्प, मृदभांड शिल्प, वस्त्र शिल्प की जानकारी प्राप्त होती है।साथ ही, उस समय के प्राप्त शैल -चित्र तत्कालीन मानव की सृजन क्षमता व बौद्धिकता के साथ शिल्प के स्वरूप को बताने में सहायक रहे। प्रस्तुत शोध सारांश द्वारा, शोध-पत्र में इन्हीं तथ्यों का सविस्तार विश्लेषण प्रस्तावित किया जाएगा ।

बीज शब्द- *लकड़ी ,पाषाण, हड्डियाँ, मृदभांड , शैल चित्र ।*

प्रस्तावना

प्रागैतिहासिक मानव की बौद्धिकता एवं सृजनशीलता की प्रवति ने मानव को जीव-जंतु जगत में विशिष्ट बनाया । सृजनात्मक प्रवृत्ति की सहायता से आदिम समाज का मानव असभ्य अतीत से सभ्य युग की ओर प्रस्थान कर एक नये युग और नई संस्कृति को विकसित होने में अपना अतुलनीय सहयोग प्रदान किया। मानव की विचार-शक्ति व वाक-शक्ति अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक समुन्नत थी। जिसकी सहायता से उसने अपने आपको वातावरण के अनुकूल बनाने के प्रयास में सफल रहा । उसने प्रकृति में उपलब्ध चीज़ों जैसे- लकड़ी, पाषाण, हड्डियाँ आदि की सहायता से अपने प्रारंभिक औजार बनाकर, अपनी बौद्धिक व सृजन शक्ति के माध्यम से अपनी शिल्पकला कौशल का परिचय दिया । साथ ही प्रागैतिहासिक शैल चित्रों की कलात्मकता, तत्कालीन मानव के सांस्कृतिक परिवेश के संदर्भ यह व्यक्त करती है की मानव अपनी बौद्धिक वह सृजन कुशलता से दैनिक-जीवन में उपयोगी वस्तुओं के बनाने में कुशल शिल्पी भी रहा होगा ।प्रस्तुत शोध पत्र में यह बताने का प्रयास किया गया है कि प्राचीन भारत के प्रागैतिहासिक काल के मानव द्वारा अपनी बौद्धिकता व सृजनशीलता द्वारा शिल्प कला के प्रारम्भिक स्वरूप को विस्तारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

शोध के उद्देश्य-

* प्रागैतिहासिक कालीन शिल्प के प्रारंभिक स्वरूप का अध्ययन करना ।
* प्रागैतिहासिक कालीन लकड़ी व पाषाण शिल्प तथा जीव जन्तुओं के अवशेषों से बनी वस्तुओं के शिल्प का अध्ययन करना ।
* प्रागैतिहासिक कालीन शैल-चित्रों के द्वारा मानव की बौद्धिकता व सृजनशीलता में अंतर्निहित शिल्प- कौशल का अध्ययन करना ।

शोध प्रश्न -प्रागैतिहासिक कालीन मानव ने अपनी बौद्धिकता एवं सृजनशीलता के माध्यम से प्रकृति से प्राप्त किन वस्तुओं का प्रयोग दैनिक-जीवन में शिल्प-कौशल के निहितार्थ में किया। तथा शिल्पकारी ने किस प्रकार से उसके जीवन को सरल बनाया ।

शोध विधि - प्रस्तावित शोध प्रबंध में ऐतिहासिक शोध-पद्धति, तथ्यात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है। जो ऐतिहासिक व विकासात्मक अध्ययन से संबंधित है। तथ्यात्मक शोध-पद्धति के आधार पर इस अध्ययन में वस्तुनिष्ठता का समावेश किया गया है।

प्रागैतिहासिक काल –

प्रागैतिहासिक काल मानव सभ्यता के विकास का सबसे दीर्घ चरण रहा । उस समय का मानव भोजन एवं सुरक्षा के लिए मुख्य रूप से पत्थर के विभिन्न औजारों का इस्तेमाल करता था। इसलिए इस काल को 'पाषाण काल' भी कहा जाता है। *(*ओमप्रकाश सिंह, *2024,* पृ.सं. *19*) क्योंकि प्रकृति के इस पर्यावरणीय वातावरण में उसे लकड़ी व पाषाण की उपलब्धता सुगम थी, जिनकी सहायता आदिम मानव ने अपने दैनिक-जीवन में प्राप्त की। प्रारंभ में उसने निश्चित रूप से वृक्षों की डालों और नैसर्गिक प्रस्तर -खंडों का हथियार के रूप में प्रयोग करता रहा होगा । अर्थात् वह औज़ार निर्माता के बजाए औजार-निर्माता के बजाय औजार-उपभोक्ता मात्र था। धीरे धीरे अनुभव बढ़ने पर उसने स्वयं हथियार बनाना सीखा, जो प्रारंभ में बहुत साधारण रहे होंगे । लेकिन समय के साथ उनके हथियार अधिकाधिक सुंदर, मज़बूत और उपयोगी होते गए । अतः मानव के औजार वस्तुतः उनकी यांत्रिक ,औद्योगिक और वैज्ञानिक सफलताओं के प्रतीक है ।*(*डॉ.श्री राम गोयल, *2008,* पृ.सं. *19)* इस प्रकार मानव ने लकड़ी व पाषाण की सहायता से, अपनी सोच व समझ द्वारा, कुछ सरल व सुरक्षात्मक वस्तुएँ बनायी होंगी । जैसे- लकड़ी से वह अपनी सुरक्षा कई प्रकार से करता रहा होगा ,जानवरों के शिकार में , उनको डराने में *(*लकड़ी के एक बड़े -सीधे भाग डंडे / दंड रूप में*)*, जानवरों से अपनी सुरक्षा के लिए लकड़ी व घास-फूस के घर बना कर, भले ही वह साधारण रहे हो । क्योंकि वह अगर पत्थर की औज़ारों को बनाने में सक्षम था, तो इसके आधार पर वह लकड़ी का भी प्रयोग इस रूप में कर रहा होगा, यह भी तर्कसंगत हो सकता है ,जो की समय के साथ नष्ट हो गए । प्रागैतिहासिक काल के मानव के जीवन में पत्थर के इन औज़ारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही होगी। क्योंकि इस काल के प्रस्तर औजार उनकी बौद्धिकता व सर्जनात्मकता का जीवंत प्रतीक माने जाते है । जो इस काल के जीवाश्म अवशेषों के साथ प्राप्त हुए है। जिनसे यह ज्ञात होता है, कि प्रस्तर के औज़ार बनाने के लिए उस समय का मानव प्रत्यक्ष प्रहार, अप्रत्यक्ष प्रहार और चाप अथवा दाब जैसी विधियों का प्रयोग करता था। जो उस समय के मानव के शिल्प कौशल को प्रदर्शित करते है। अतः औज़ार प्रारम्भिक मानव के कार्यकलाप, व्यवहार, संस्कृति तथा परंपरा को समझने की सबसे महत्वपूर्ण कुंजी है।*(*ओम प्रकाश सिंह, *2024,* पृ.सं. *25)* प्रागैतिहासिक संस्कृति का मानव पाषाण युगीन प्राणी था। *(*वासुदेव शरण अग्रवाल, *2012,* पृ.सं. *9)* अतः इन पाषाण औज़ारों के आधार पर ही भारत में प्रागैतिहासिक काल को तीन चरणों में विभाजित किया गया ।

1 **.** पुरापाषाण काल

2 **.** मध्यपाषाण काल

3 **.** नवपाषाण काल

पुरापाषाण काल से नवपाषाण काल तक भारी और बेडौल उपकरणों से सुडौल उपकरणों तक का सफर बहुत ही लम्बा और रोचक है। जो भूवैज्ञानिक युग ,औज़ारों के प्रकार और तकनीक तथा जीवन निर्वाह पद्धति पर आधारित है *(*ओम प्रकाश सिंह, *2024,* पृ.सं. *22)*

1. पुरापाषाण काल

इस काल के अंतर्गत निम्नपुरापाषाण काल में मानव ने जिन औजारों को बनाया, उनमें खंदक *(chopper-chopping tool),* हस्त कुठार *(Hand Axe),* विदारणी *(Cleaver)* थे । मध्य पाषाण काल में पहले चरण के क्रमिक सुधारों के फलस्वरूप, इस काल में कोर औजारों अतिरिक्त मध्यम आकार के फ्लेक *(Flake)* के विभिन्न औजार जैसे खुरचनी*(Scraper),* वेधक*(Borer),*और नोक वाले अग्रक *(point)* है। और उच्चपुरापाषाण काल में फलक*(Blades)* और तक्षणी *(Burins)* का प्रयोग हुआ। *(*उपिंदर सिंह**,** *2024,* पृ.सं. *77-79)* इस प्रकार ये छोटे व धारदार हथियार होते थे।जिन्हें दाब द्वारा फ्लेक निकालकर बनाया जाता था। इस काल में हड्डियों के बने औजार भी एक महत्वपूर्ण विशेषता रहें।*(*

डी. एच. गार्डन, *1970,* पृ.सं. *18)* इस प्रकार अनुमानतः जब वह लकड़ी व पत्थर से औजारों को बनाकर जानवरों का शिकार किया, उनके मांस को भोजन के रूप में प्रयोग करने के बाद जो अवशेष के रूप में हड्डियाँ प्राप्त हुई, उनका उपयोग उसने औजारों के रूप में संभवतः किया होगा। क्योंकि हड्डियाँ भी लकड़ी व प्रस्तर जैसी समरूपता रखती है। और जानवरों की सींगों तथा हाथी दाँत की सहायता से भी वह उपकरण बनाता था। *(*डॉ.श्री राम गोयल, *2008,* पृ.सं. *59-60)* अतः इस समय का मानव अपनी बौद्धिकता व सृजनशीलता के माध्यम से प्रस्तर,लकड़ी,हड्डियों की शिल्पकारी में निरंतर कुशल होता गया।

2.मध्यपाषाण काल

यह काल पुरापाषाण काल और नवपाषाण काल के बीच का संक्रमण काल रहा। इस समय जलवायु परिवर्तन द्वारा उपलब्ध नए संसाधनों की सहायता से मानव ने पूर्ववर्ती काल की अपेक्षा अधिक परिष्कृत व सूक्ष्म पाषाण औजार *(*लकड़ी अथवा अस्थि के कुंदे लगाकर संयुक्त औज़ार*)* बनाये। इस प्रकार के औजारों में भाला ,हँसिया, आरी ,मछली पकड़ने का हुक तथा तीर आदि बनाये जाते थे। *(*ओम प्रकाश सिंह, *2024,* पृ.सं. *36)* जिनका प्रयोग आखेट व कृषि दोनों में किया जाता होगा। इस प्रकार पत्थर के औजारों के अतिरिक्त, वह मानव हड्डियों तथा सिंगों से आभूषण *(*महदहा से हाथी दाँत का एक लॉकेट *)* व औजारों तथा मृदभांडो *(*मिर्ज़ापुर ज़िले के लेखहिया से प्राप्त कुछ मृदभांड*)* को बनाता था। जो पुरा पाषाण काल की तुलना में काफ़ी परिष्कृत थे।*(*ओम प्रकाश सिंह, *2024,* पृ.सं. *37)* इस काल में मानव झोपड़ी नुमा अस्थाई घरों में निवास करते थे ,इनकी दीवारें पेड़ की टहनियों की बनी होती थी, जिन पर मिट्टी का प्लास्टर लगा होता था। आरंभिक शैल चित्रकला भी मुख्यत: मध्य पाषाण काल से ही संबंधित है*(*ओम प्रकाश सिंह, *2024,* पृ.सं. *38)*अतः इस काल में मानव अपनी बौद्धिक व सृजन क्षमता के द्वारा शिल्पकारी में कुशल व प्रगतिशील रहा होगा।

3. नवपाषाण काल

नव पाषाण क़ालीन मानव की बौद्धिकता व सृजनशीलता के अंतर्गत इस युग में उसने पहली बार कृषि कर्म और पशुपालन के द्वारा खाद्य-पदार्थों का उत्पादन करना प्रारंभ किया।उसने इस काल में काष्ठ कला, मृदभाण्ड बनाना तथा कपड़ा बुनना इत्यादि शिल्प कलाओं का आविष्कार भी किया।*(*डॉ.श्री राम गोयल, *2008,* पृ.सं. *66)* इन सब उद्योगों में उसे नए ढंग के मज़बूत और धारदार उपकरणों की ज़रूरत पड़ी, इसकी पूर्ति के लिए उसने पाषाण के पॉलिश दार औजार और हथियार बनाना *सीखा* ।*(*डॉ.श्री राम गोयल, *2008,*पृ.सं.*66,* ओमप्रकाशसिंह, *2024,*पृ.सं.*3)* अतः इन उपकरणों के कारण पुरातत्ववेत्ता इस युग को नवपाषाण काल के नाम से पुकारते हैं। *(*विमान बसु, *2000,* पृ.सं. *18)* और प्रमुख औजारों में सेल्ट *(*कुल्हाड़ी*)* , चक्की, मूसल ,वलय, जैसे औज़ार बड़ी संख्या में पाए गए है, जिनका प्रयोग कृषि कार्य में अनाज को तैयार करने के लिए किया जाता होगा। कृषि की देखभाल के लिए स्थायी निवास भी बनाना प्रारंभ किया होगा। जो लकड़ी व मिट्टी से निर्मित थे। जो उनकी बौद्धिक व सृजन क्षमता को प्रदर्शित करते है।*(*ओमप्रकाशसिंह,*2024,*पृ.सं.*39)* इसके अतिरिक्त उस समय की कलाकृतियों के अंतर्गत हम शैल-चित्रों को देख सकते है। प्रागैतिहासिक शैल-चित्रों से न केवल प्राचीनतम मनुष्य के स्वभाव , जीवन संघर्ष और उसकी बाह्य परिस्थितियों के संघात का ज्ञान प्राप्त होता है। साथ ही उसकी चेतना में निहित सृजनशीलता, मौलिकता, उदभावना- शक्ति तथा व्यवस्था की सजगता से युक्त सौन्दर्य बोध का भी प्रमाण मिलता है। शैल -चित्रों की चिंतन प्रणाली और जीवन दृष्टि से सीधा संबंध है ।यदि हम उनके निर्माताओं को बर्बर असभ्य और मानते है तो हमारे पास उनकी सृजन शक्ति और सौंदर्य बोध को व्याख्यायित करने का कोई आधार शेष नहीं रहता, किंतु यदि हम संदेश की सीमा से परे पहुँच कर प्रामाणिक प्रतीत के आधार पर मान्य करने पर उनकी कला की प्राण वक्ता और श्रेष्ठता हमारे अनुभव का विषय बन जाती है।*(*डॉ. जगदीश गुप्त, *1967,* पृ.सं. *11)* चित्रों का महत्व इसी से विदित हो जाता है कि यूरोप के प्रागैतिहास को मुख्यतया उन्हीं चित्रों के शोध के आधार पर लगभग तीस-चालीस सहस्राब्दियों तक का गौरवपूर्ण विस्तार प्राप्त हुआ व कला के क्षेत्र में भी अतुल सांस्कृतिक प्रतिष्ठा उपलब्ध हुई।*(*डॉ. जगदीश गुप्त, *1967,* पृ.सं. *11-12)* मानव के भीतर से सृजन शक्ति इतनी पुरातन और गहराई तक व्याप्त है। इसका ज्वलन्त प्रमाण शिला - चित्रों से प्राप्त होता है। आदिम मानव ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये नदी-डोरियों व प्राकृतिक कंदराओं में अपना निवास

स्थान बनाया। इन्हें लोक भाषा में आज भी 'दरी' कहते है ।जैसे-मिर्जापुर जिले में लिखुनिया दरी ।इन कंदराओं की भीतों पर लाल गेरू या धाऊ पाषाण (हैमेटाइट) से बनाये हुए बहुत से रेखाचित्र पाए गए है , जिन्हें प्रस्तर-शैल कहते है। लोक भाषा में इन के लिए रकत की पुतरियाँ शब्द प्रचलित है । ये चित्र मुख्यत: चार स्थानों से मिले है।(वासुदेव शरण अग्रवाल,*2012*,पृ.सं.*12*,डॉ. जगदीश गुप्त, *1967*, पृ.सं. *69-70)* मध्य प्रदेश में महादेव पहाड़ी के पंचमढ़ी नामक स्थान के आस-पास । यहाँ एक के ऊपर एक चढ़ी हुई चित्रों की चार तहे मिलती है जिनमें पहली परत मनुष्य व पशु की तीली नुमा आकृतियाँ है। इन्हें मानव व पशु के चित्रों के चित्रांकन का प्रारंभिक स्वरूप कहा जा सकता है । दूसरी परत के चित्रों, जिनमें मानव आकृति हाथों में धनुष-बाण, धातु के बने नोक दार तीर व भालों द्वारा आखेट करने के संकेत है। तथा बाँस की लंबी सीढ़ियों की सहायता से ऊँचे पेड़ों व झुकी हुई पहाड़ियों से लटकते हुए शहद के छत्तों से शहद उतारने के चित्र उनकी बौद्धिकता व सृजन क्षमता का परिचय देते है। तीसरी व चतुर्थ परत से मानव के बदलते हुए सांस्कृतिक रहन-सहन के चित्रों का अंकन है जैसे एक आदमी का बाजा बजा रहा है। कुछ आदमी ढोल व दुहरी नाय बजा रहे। तीर ,कमान , तरकस , सीधी तलवार ,पत्ती नुमा छुरी आदि के चित्र प्रदर्शित है।इसी प्रकार मध्य प्रदेश में रायगढ़ के समीप सिंघनपुर और काबरा पहाड़, मिर्ज़ापुर क्षेत्र के चित्र सोन नदी घाटी, बाँदा ज़िले में मानिक पुर शैल-चित्र प्राप्त है। *(*वासुदेव शरण अग्रवाल, *2012,* पृ.सं. *12)*अतः यह शैल-चित्र प्रागैतिहासिक कालीन मानव द्वारा आखेट ,मनोरंजन व दैनिक क्रियाकलापों से संबंधित छवि चित्र प्रस्तुत करते है। जिससे उस समय के मानव की बौद्धिकता व सृजनशीलता के साथ शिल्पकारी की जानकारी प्राप्त होती है ।

निष्कर्ष

प्रागैतिहासिक कालीन मानव की बौद्धिकता व सृजन क्षमता उस युग में मानव विकास की प्रमुख विशेषता रही। जिसके आधार पर उसने जीव-जंतु समूह में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। उस समय मानव की बौद्धिकता व सृजन क्षमता ने ही उसे शिल्प-कौशल में भी निपुण बनाया। शिल्पकारी के प्रारंभिक स्वरूप के प्राप्त प्रस्तर अवशेषों, जिसके अंतर्गत चॉपर-चॉपिंग,हस्तकुठार,खंडक, विदारणी,खुरचनी,वेधक,फलक, तक्षणी तथा जीव-जन्तुओं के अवशेषों *(*हड्डियाँ,सिंगों,दातों*)* से बनी वस्तुओं से उस समय की शिल्प कला की पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है । नव पाषाण काल में मानव ने पाषाण के पॉलिश दार औजार और हथियार बनाने में भी कुशलता प्राप्त की, साथ ही उसने काष्ठ शिल्प, मृदभाण्ड शिल्प तथा वस्त्र शिल्प इत्यादि शिल्प कलाओं का आविष्कार भी किया । प्रागैतिहासिक काल के शैल चित्र भी उस समय के मानव की बौद्धिकता व सृजन शक्ति के साथ शिल्प की भी जानकारी प्रस्तुत करते है।ये शैल-चित्र प्रागैतिहासिक मानव के मनोजगत में निश्चयात्मकता,विश्वसनीयता और सूक्ष्मता के साथ जीवंत अनुभव प्रदान करते है, उनमें निहित कला-चेतना एवं रचना-शक्ति अतीत का बोध कराती है, तथा उनके अस्तित्व को शिल्प कला से भी जोड़ने में सहायक है । अतः प्रागैतिहासिक कालीन मानव की बौद्धिकता व सृजनशीलता ने उसे शिल्पकारी की शुरुआत करने में सहायता प्रदान की ।

संदर्भ-

अग्रवाल, वासुदेव शरण. (2012). *भारतीय कला*. वाराणसी: पृथिवी प्रकाशन।
गार्डन, डी. एच. (1970). *भारतीय संस्कृति की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि*. बिहार: हिन्दी ग्रंथ अकादमी प्रकाशन।
गुप्त, जगदीश. (1967). *प्रागैतिहासिक भारतीय चित्रकला*. दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
गोयल, श्रीराम. (2008). *प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
बसु, विमान. (2000). *मानव की कहानी*. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
मुखर्जी, राधा कुमुद. (1990). *हिंदू सभ्यता*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।
सिंह, उपिंदर. (2024). *प्राचीन एवं पूर्व*
सिंह, ओम प्रकाश. (2024). *प्राचीन भारत*. हैदराबाद: ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड।
हबीब, इरफ़ान. (2022). *सिंधु सभ्यता*. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड।
मध्यकालीन भारत का इतिहास. नोएडा: पियरसन इंडिया एजुकेशन सर्विस प्राइवेट लिमिटेड।